

Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 14 जून, 2022

सुरक्षा-मतिर परियोजना

हाल ही में केरल राज्य में सुरक्षा-मतिर परियोजना शुरू की गई है। सुरक्षा-मतिर परियोजना एक वाहन नगिरानी प्रणाली है जो किसी भी दुर्घटना के मामले में खतरे का संदेश भेजती है। इस परियोजना की शुरुआत मोटर वाहन विभाग द्वारा नरिभया योजना के तहत की गई है। यात्रा के दौरान कोई अप्रिय घटना होने पर यह प्रणाली मालिकों के मोबाइल फोन पर एक खतरे का संदेश भेजेगी। वाहनों के साथ एक व्हीकल लोकेशन ट्रैकिंग डेविइस (VLTD) लगाया जाएगा। यदि वाहन दुर्घटना में शामिल है या यदि चालक वाहन को अधिक गति देता है, तो मालिकों को VLTD से अलर्ट SMS प्राप्त होगा। डेविइस की स्थापना करने के समय मालिकों द्वारा प्रदान किये गए प्रसंगिक नंबर और ईमेल आईडी पर SMS एवं ई-मेल के माध्यम से अलर्ट तुरंत भेजे जाएंगे। इस प्रकार मालिक संदेश की प्रामाणिकता को ध्यान में रखते हुए वाहन की सुरक्षा आवाजाही सुनिश्चित करने में सक्षम होंगे।

वशिव रक्तदाता दविस

प्रत्येक वर्ष 14 जून को संपूर्ण दुनिया में वशिव रक्तदाता दविस (World Blood Donor Day) मनाया जाता है। इस दविस का मुख्य उद्देश्य सुरक्षा रक्त एवं रक्त उत्पादों की आवश्यकता के संदर्भ में जागरूकता बढ़ाना और रक्तदान के लिये रक्तदाताओं का आभार व्यक्त करते हुए अन्य लोगों को भी इस कार्य हेतु प्रोत्साहित करना है। वशिव रक्तदाता दविस 2022 की थीम "Donating Blood Is An Act Of Solidarity. Join the effort and save lives" रखी गई है। इस दविस की शुरुआत वर्ष 2005 में वशिव स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा रक्तदाताओं को धन्यवाद देने और सुरक्षा रक्त की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करने के उद्देश्य से की गई थी। यह दविस महान जीवविज्ञानी कार्ल लैंडस्टीनर (Karl Landsteiner) की याद में प्रत्येक वर्ष 14 जून को मनाया जाता है, जिनका जन्म 14 जून, 1868 को हुआ था। उल्लेखनीय है कि उन्होंने मानव रक्त में उपस्थित एग्ल्युटिनिन (Agglutinin) की मौजूदगी के आधार पर रक्तकणों का A, B और O समूह में वर्गीकरण किया था। जटिल चिकित्सा और सर्जरी की स्थिति में रोगी का जीवन बचाने के लिये रक्त की आवश्यकता पड़ती है। प्राकृतिक आपदाओं, दुर्घटनाओं और सैन्य संघर्ष जैसी आपात स्थितियों में घायलों के इलाज में भी रक्त की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। जीवन रक्षक के रूप में यह बहुत ही अनविर्य है। इतना महत्वपूर्ण होने के बावजूद सुरक्षा रक्त प्राप्त करना आज भी काफी चुनौतीपूर्ण है। परिणामस्वरूप अधिकांश नमिन और मध्यम आय वाले देशों को बुनियादी ढाँचे की कमी जैसे विभिन्न कारणों के चलते अपने नागरिकों को सुरक्षा रक्त उपलब्ध कराने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

38वीं भारत-इंडोनेशिया समन्वति गश्त

अंडमान एवं निकोबार कमान की [भारतीय नौसेना इकाइयों और इंडोनेशियाई नौसेना](#) के बीच 38वीं भारत-इंडोनेशिया समन्वति गश्त (इंडो-इंडोनेशिया कॉर्पेट) आज से अंडमान सागर और मलक्का जलडमरूमध्य में आयोजित की जा रही है। इसका आयोजन 24 जून, 2022 तक किया जाएगा। इस अभ्यास में दोनों राष्ट्रों के समुद्री गश्ती विमान हिस्सा लेंगे। यह दोनों देशों की नौसेनाओं के बीच आपसी विश्वास, तालमेल और सहयोग को रेखांकित करती है। समुद्री संपर्कों को सुदृढ़ करने हेतु दोनों नौसेनाएँ वर्ष 2002 से वर्ष में दो बार अपनी अंतरराष्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा के साथ 'कॉर्पेट' अभ्यास का संचालन कर रही हैं। इस अभ्यास का उद्देश्य हृदि महासागर क्षेत्र को वाणज्यिक नौवहन, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वैध समुद्री गतिविधियों के संचालन के लिये सुरक्षा करना है। 'कॉर्पेट' अभ्यास नौसेनाओं के बीच समन्वय एवं अंतःक्रियाशीलता के निर्माण में मदद करता है और मछली पकड़ने की अवैध व अनयंत्रित गतिविधियों की रोकथाम तथा दमन, मादक पदार्थों की तस्करी, समुद्री डकैती की रोकथाम हेतु सूचनाओं के आदान-प्रदान, अवैध प्रवासन व समुद्र में खोज एवं बचाव कार्यों हेतु महत्वपूर्ण है।